

भगत नामदेव – सबद ४५
घर की नारि तिआगै अंधा ॥
रागु भैरउ, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, ११६४

घर की नारि तिआगै अंधा ॥
पर नारी सिउ घालै धंधा ॥
जैसे सिंबलु देखि सूआ बिगसाना ॥
अंत की बार मूआ लपटाना ॥ १ ॥
पापी का घरु अगने माहि ॥
जलत रहै मिटवै कब नाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥
हरि की भगति न देखै जाइ ॥
मारगु छोडि अमारगि पाइ ॥
मूलहु भूला आवै जाइ ॥
अमृतु डारि लादि बिखु खाइ ॥ २ ॥
जिउ बेस्वा के परै अखारा ॥
कापरु पहिरि करहि सींगारा ॥
पूरे ताल निहाले सास ॥
वा के गले जम का है फास ॥ ३ ॥
जा के मसतकि लिखिओ करमा ॥
सो भजि परि है गुर की सरना ॥
कहत नामदेउ इहु बीचारु ॥
इन बिधि संतहु उतरहु पारि ॥ ४ ॥ २ ॥ ८ ॥

सार: अपनी ऊर्जा, ध्यान और जीवन को ऐसी उपलब्धियों की खोज में लगाना जिनसे कभी स्थायी संतुष्टि नहीं मिल सकती, अंततः दुःखद नतीजे की ओर ले जाता है। मन निरंतर तृष्णा, चाहत और लगाव के चक्र में फँस जाता है जिसमें इच्छा दूसरी इच्छा को जन्म देती रहती है। हर आकांक्षा, संतुष्टि

का वादा तो करती है लेकिन केवल अगली लालसा के लिए मार्ग प्रशस्त करती है जिससे सदा ख़ालीपन का भाव रहता है। समय के साथ, यह निरंतर भाग-दौड़ इंसान को पूरी तरह अपनी चपेट में ले सकती है जिससे स्पष्टता, आज़ादी और मन की शांति समाप्त हो जाती है और जीवन बिना किसी उद्देश्य और सजगता के ही रह जाता है। इस चक्र से बाहर निकलने के लिए चिंतन-मनन की यात्रा शुरू की जाती है।

घर की नारि तिआगै अंधा ॥

घर में रहने वाले जीवनसाथी को वह लोग छोड़ देते हैं जो असहाय या अक्षम हो जाते हैं। यह उन लोगों के लिए रूपक है जिनमें सही-ग़लत की समझ की कमी होती है, उनकी अंतरात्मा अपनी सहज समझ से दूर हो जाती है और अज्ञानता में भ्रम के जाल में फँस जाती है।

पर नारी सिउ घालै धंधा ॥

किसी और के जीवनसाथी के साथ संबंध बनाना। इसका अर्थ है उस भ्रम में उलझ जाना कि संतुष्टि बाहरी स्रोतों से मिलती है जिससे हमारी आंतरिक सच्चाई कमज़ोर हो जाती है।

जैसे सिंबलु देखि सूआ बिगसाना ॥

जैसे तोता सिंबल के पेड़ को देखकर खुश हो जाता है। पेड़ का यह उदाहरण, जिसके फूल आकर्षक तो होते हैं पर बेस्वाद, संभावनाओं के भ्रम को दर्शाता है। हर वस्तु जो आकर्षक दिखती है, ज़रूरी नहीं कि वह मूल्यवान भी हो।

अंत की बार मूआ लपटाना ॥ १ ॥

अंत में, वह उलझा हुआ और कसकर पकड़े हुए ही समाप्त हो जाता है। यह दृश्य आध्यात्मिक पतन को दर्शाता है, ऐसा जीवन जो संपत्ति, रिश्तों, रुतबे और अधूरी इच्छाओं को छोड़ नहीं पाता। (१)

पापी का घर अगने माहि ॥

नकारात्मक सोच वाले व्यक्ति का घर आग के बीच होता है। यह दर्शाता है कि कैसे हमारा आंतरिक अस्तित्व जलती हुई इच्छाओं और असंतोष का मानसिक माहौल बना सकता है।

जलत रहै मिटवै कब नाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥

यह निरंतर जलती रहती है और इसे कभी बुझाया नहीं जा सकता। यह कभी पूरी न होने वाली इच्छाओं और असंतोष की उस निरंतर स्थिति का प्रतीक है जो इंसान के अस्तित्व को ही खा जाती है। (१)(विराम)

हरि की भगति न देखै जाइ ॥

सर्वव्यापी चेतना के प्रति भक्ति न तो सराही जाती है और न ही अनुभव की जाती है। यह अज्ञानता और आत्म-चिंतन के खोए हुए अवसर को दर्शाता है जिससे हम भ्रमों से परे नहीं देख पाते।

मारगु छोडि अमारगि पाइ ॥

सही रास्ते से भटककर, यह दिशाहीन हो जाती है। दिशा का खो जाना आंतरिक संतुलन से भटकाव को दिखाता है जिससे जीवन बिना किसी उद्देश्य एवं जागरूकता के बीतता है।

मूलहु भूला आवै जाइ ॥

अपने मूल स्रोत को नज़रअंदाज़ करके, यह प्रगति और पिछड़ेपन के चक्र में फंसी रहती है। यह द्वन्द्व उन्हीं पद्धति के बार-बार होने को दिखाता है क्योंकि मूल कारण पर कभी विचार नहीं किया जाता।

अमृतु डारि लादि बिखु खाइ ॥ २ ॥

यह अमृत को गिराकर, ज़हर भर लेती है और उसे ही पीती है। स्वयं को हानि पहुँचाने की यह प्रवृत्ति मानवीय हालत के उस विरोधाभास को दिखाती है जिसमें हम अक्सर उस चीज़ को ठुकरा देते हैं जो हमें पोषण देती है और उसे अपनाते हैं जो हमारे लिए हानिकारक है। (२)

जिउ बेस्वा के परै अखारा ॥

जैसे नर्तकी की महफ़िल सजाई जाती है। यह दिखावा उस जीवन-शैली को दर्शाता है जहाँ भौतिक सुख-सुविधाओं का आकर्षण जीवन के सार्थक पहलुओं पर हावी हो जाता है।

कापरु पहिरि करहि सींगारा ॥

लोग तरह-तरह के कपड़े पहनते हैं और सजते-संवरते हैं। यह बाहरी दिखावे पर ध्यान देने की प्रवृत्ति को दिखाता है, ताकि मन के भीतर की आध्यात्मिक शून्यता का सामना न करना पड़े।

पूरे ताल निहाले सास ॥

इंसान अपनी हर सांस को बहुत ध्यान से मापता और गिनता है। यह दिखाता है कि पूर्णता या निपुणता कैसे सम्मोहित कर सकती है, लेकिन इस हुनर का क्या मूल्य, अगर मन पर अभी भी डर, लालसा और अहं का राज हो।

वा के गले जम का है फास ॥३॥

उसके गले में मौत का फंदा पड़ा होता है। यह बताता है कि इंद्रियों की दुनिया के आकर्षण के नीचे बंधन, दुख और पतन का अटूट जाल छिपा होता है। (३)

जा के मसतकि लिखिओ करमा ॥

जिनके माथे पर अच्छे कर्म लिखे होते हैं। यह आत्म-चिंतन के उस प्रयास को मान्यता देता है जो समझ पैदा करता है और इंसान को भ्रम से निकालकर जागरूकता की ओर ले जाता है।

सो भजि परि है गुर की सरना ॥

इसलिए, तुरंत सोच-विचार करें और ज्ञान की समझ की शरण में चले जाएँ। यह आंतरिक नैतिकता की कृपा को दर्शाता है जो उलझन को दूर करती है और अंतरात्मा को स्पष्टता की ओर ले जाती है।

कहत नामदेउ इहु बीचारु ॥

नामदेव कहते हैं, यही मेरा सोच-समझकर किया गया चिंतन है। यह समझ बताती है कि केवल सिद्धांत ही नहीं बल्कि वास्तविक अनुभव ही सच्चाई की विश्वसनीय समझ देते हैं।

इन बिधि संतहु उतरहु पारि ॥४॥२॥८॥

इस तरह, आध्यात्मिक साधक जीवन के सागर को पार करते हैं। इससे पता चलता है कि जागरूकता और वास्तविक सामंजस्य में लौटने से, आत्म-चिंतन, संदेह और असुरक्षा की भावनाओं से ऊपर उठने में मदद करता है। (४)(२)(८)

तत्त्व: भगत नामदेव बताते हैं कि बाहरी दिखावे में उलझकर मन कितनी आसानी से अपनी आंतरिक दृष्टि खो सकता है। यह भटकाव चीज़ों के बाहरी रूप और उनके असली स्वभाव के बीच अंतर पैदा कर देता है। वह इस बात को सिंबल के पेड़ के उदाहरण से समझाते हैं, जो देखने में तो आकर्षक लगता है, लेकिन असल में सूखा और बेस्वाद होता है। एक तोता रस पाने की उम्मीद में उस पेड़ पर चोंच मारता रहता है, फिर भी वह भूखा ही रह जाता है। यहाँ मुख्य बात यह है कि सिर्फ इंद्रियों के सुख के लिए जीने से हम आध्यात्मिक रूप से अधूरे रह सकते हैं और अंत में निराशा ही हाथ लगती है।

सबद व्याख्या विनइंदर कौर और अमरदीप सिंह

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com